डॉ. सुधा अरोड़ा जी की कहानियों में नारी-चित्रण

कुमारी राजश्री पांडुरंग नामये, शोधार्थी, मुंबई विश्वविद्यालय

सारांश

हिंदी साहित्य में नारी-चित्रण एक महत्वपूर्ण और व्यापक विषय रहा है। महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री-जीवन की विविध समस्याओं, संवेदनाओं, संघर्षों तथा सामाजिक स्थितियों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। डॉ. सुधा अरोड़ा हिंदी की ऐसी महत्वपूर्ण कथाकार हैं, जिनकी कहानियों में स्त्री की अस्मिता, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, सामाजिक विसंगतियों तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध के स्वर प्रमुखता से उभरते हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री के व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक परिवेश के बीच विद्यमान अंतर्विरोधों को उजागर करती हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य डॉ. सुधा अरोड़ा की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूपों, उसकी मानसिक स्थिति, भावनात्मक संघर्षों तथा सामाजिक चुनौतियों का विश्लेषण करना है। उनकी कथा-संवेदना में स्त्री केवल पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने वाली पात्र नहीं है, बल्कि वह अपने अधिकारों, निर्णयों और स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति सजग व्यक्तित्व के रूप में भी सामने आती है। कथाकार ने विवाह संस्था, पारिवारिक संबंधों, लैंगिक असमानता, सामाजिक रूढ़ियों तथा स्त्री के शोषण जैसे प्रश्नों को अपनी कहानियों के माध्यम से उठाया है। उनकी रचनाओं में स्त्री की पीड़ा के साथ-साथ उसके प्रतिरोध, आत्मबोध और परिवर्तन की आकांक्षा भी अभिव्यक्त होती है।

इस प्रकार, डॉ. सुधा अरोड़ा की कहानियों में नारी-चित्रण स्त्री के जीवन की जटिलताओं को समझने के साथ-साथ समाज में उसकी स्थिति, पहचान और अधिकारों के प्रश्नों पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है। उनका कथा-साहित्य स्त्री-विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तथा समकालीन सामाजिक चेतना को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द: डॉ. सुधा अरोड़ा, नारी-चित्रण, स्त्री-विमर्श, नारी-अस्मिता, स्त्री-संघर्ष, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक असमानता, महिला चेतना, आत्मसम्मान, हिंदी कहानी।